अव्यवस्था के मनोवैज्ञानिक असर

आपके आसपास फैली अव्यवस्था विचित्र मनोवैज्ञानिक असर पैदा कर सकती है। हाल ही में किए गए एक मज़ेदार अध्ययन का यही निष्कर्ष है मगर इस अध्ययन की व्याख्या को लेकर मतभेद व अनिश्चितता बनी हुई है।

यह बात आम तौर पर कही जाती है कि अस्त-व्यस्त या उपेक्षित परिवेश व्यक्तियों में अपराध व समाज-विरोधी व्यवहार को बढ़ावा देता है। इस बात को समझने के लिए कई अध्ययन हुए हैं। अब नेदरलैण्ड के टिलबुर्ग विश्वविद्यालय के डाइडेरिक स्टेपल और सीगवार्ट लिंडबर्ग ने एक अध्ययन के आधार पर दावा किया है कि अस्त-व्यस्त परिवेश व्यक्तियों को अन्य लोगों के बारे में रूढ़ छवियों यानी स्टीरियोटाइप्स में बंधने को विवश करता है। यानी यदि आप किसी अस्त-व्यस्त स्थान पर बैठकर अन्य सामाजिक समूहों के बारे में सोचेंगे तो ज़्यादा संभावना है कि आप उन बातों को मानने को ज़्यादा तैयार होंगे जो उन समूहों के बारे में आम तौर पर कही जाती हैं।

अध्ययन कई चरणों में किया गया था। एक चरण में उट्रेख्ट के व्यस्त रेल्वे स्टेशन पर आम गुज़रते लोगों से कहा गया कि वे एक कतार में रखी कुर्सियों पर बैठकर एक प्रश्नावली को भर दें। उस दिन सफाईकर्मियों की हड़ताल की वजह से स्टेशन गंदा व अस्त-व्यस्त था। हड़ताल खत्म होने के बाद उन्होंने यही काम एक बार फिर किया। प्रश्नावली में कुछ सामाजिक समूहों के बारे में सवाल पूछ गए थे। ये सवाल उन समूहों के बारे में सकारात्मक व नकारात्मक पूर्वाग्रहों से सम्बंधित थे। कुछ सवाल उदासीन भी थे।

दोनों माहौल में दिए गए जवाबों में स्पष्ट अंतर देखा गया। अस्त-व्यस्त माहौल में दिए गए जवाबों में लोगों ने उन्हीं बातों को ज़्यादातर सही बताया था जो उन समूहों की रूढ़ छवियों से जुड़ी थीं। इसके अलावा एक अचेतन परीक्षण भी साथ-साथ किया गया था। जब लोग प्रश्नावली का जबाव देने को बैठते थे तो एक छोर की कुर्सी पर एक अश्वेत व्यक्ति तथा दूसरे छोर की कुर्सी पर एक श्वेत व्यक्ति बैठा होता था। सारे उत्तरदाता गोरे थे। देखा गया कि अस्त-व्यस्त माहौल में आम तौर पर उत्तरदाता बैठने के लिए उस कुर्सी को चुनते थे जो अश्वेत व्यक्ति से दूर होती थी जबकि व्यवस्थित, साफ-सुथरे स्टेशन के माहौल में ऐसा कोई रुझान नहीं देखा गया।

एक अन्य प्रयोग में यह भी देखा गया कि जो प्रभाव होता है वह गंदगी का नहीं बल्कि अव्यवस्था का होता है। इस प्रयोग में एक साफ-सुथरी गली में चीज़ों को अव्यवस्थित ढंग से रखकर प्रश्नावली भरवाने का काम किया गया था। इसमें देखा गया कि अस्त-व्यस्त (मगर साफ-सुथरी) जगह पर भी लोगों के पूर्वाग्रह बलवती हो जाते हैं।

इन प्रयोगों के आधार पर शोधकर्ताओं का निष्कर्ष है कि अस्त-व्यस्तता पूर्वाग्रहों को हवा देती है। अन्य वैज्ञानिक इस निष्कर्ष से सहमत नहीं हैं। उनका कहना है कि अस्त-व्यस्तता के असर काफी अलग-अलग होते हैं। लोग एक स्तर के बिखराव के आदी हो जाते हैं। यानी यह नहीं कहा जा सकता कि अस्त-व्यस्त माहौल में रहने वाले लोग ज़्यादा पूर्वाग्रहों से ग्रस्त होंगे। एक कृत्रिम माहौल बनाकर परीक्षण करना अलग बात है और वास्तविक परिस्थिति में उन परिणामों को जस-का-तस लागू कर देना अलग बात है। ***(स्रोत फीचर्स)***